निर्देशन की आवश्यकता
Need of Guidance

* निर्देशन की आवश्यकता को निम्नलिखित दृष्टिकोणों से वर्णित कर सकते हैं।

1. व्यक्तिगत दृष्टि से → Form Individual point of view
2. सामाजिक दृष्टि से → Form social point of view
3. शैक्षिक दृष्टि से → Form Educational Point of view
4. मनोवैज्ञानिक दृष्टि से → Form Psychological point of view
5. शहरी क्षेत्रों की दृष्टि से → Form Urban Areas Point of view
6. ग्रामीण क्षेत्रों की दृष्टि से → Form Rural Areas point of view
7. राष्ट्रीय दृष्टि से → Form National point of view

1. व्यक्तिगत दृष्टि से निर्देशन की आवश्यकता → Need of Guidance Form Individual point of view

प्रत्येक व्यक्ति की कुछ मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आवश्यकताएं होती हैं। व्यक्ति अपने वातावरण के साथ सम्पूर्ण समायोजन चाहता है वह अपनी आधारभूत आवश्यकताओं के पश्चात मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति करना चाहता है। इसलिए निर्देशन की आवश्यकता है।

(i) संतुलित शारीरिक विकास हेतु निर्देशन की आवश्यकता

व्यक्ति को अपने शारीरिक विकास के लिये निर्देशन की आवश्यकता हो सकती है। किशोरावस्था में किशोरों का शारीरिक विकास को लेकर विशेष रूप से चिन्तित रहना स्वाभाविक है। जैसे → आहार,

notes
Phone
email
website

Scanned with CamScanner

भोजन करना, स्वास्थ्य, आदतें आदि के लिए आवश्यकता है।

(ii) संतुलित मानसिक विकास हेतु निर्देशन की आवश्यकता:

मानसिक विकास के लिए भी व्यक्ति एवं विद्यार्थियों को निर्देशन की आवश्यकता होती है। विभिन्न परिस्थितियाँ एवं वातावरण बुद्धि के विकास के लिए सहायक होता है। स्मृति (memory) को बढ़ाने हेतु उपायों में निर्देशन सहयोगी है। इसके अतिरिक्त अपने तनावों के दौरान मानसिक संतुलन को बनाए रखे, विपरीत परिस्थितियों में भी निरंतर कार्य कर सके इत्यादि में निर्देशन सहायक सिद्ध होता है।

(iii) मनोगत्यात्मक विकास Psychodynamic Development

क्रियाशीलता एवं गत्यात्मकता मनुष्य के व्यक्तित्व का दर्पण है। जिसका अर्थ उसमें कौशल और निपुणता का समावेश होना आवश्यक है। और कार्य करके सीखना अथवा सम्पूर्णतापूर्वक सम्पन्न करना व्यक्ति विशेष के गत्यात्मक कौशल पर निर्भर करता है।

(iv) समस्या समाधान Solving the problem

अपने जीवन में मनुष्य को समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिनका हल वह स्वयं खोज पाने में असमर्थ पाता है, जिससे उसका विकास प्रभावित होता है। निर्देशन के माध्यम से व्यक्ति अपने समस्या को समझ सके, उसको हल कर सके, इस योग्य ब… हेतु निर्देशन आवश्यक बनता है। समस्या समाधान, सम… व्यवहार की परख की आवश्यकता है।

(v) जीवन समायोजन (Adjustment In Life)

समायोजन में व्यक्ति की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। निर्देशन व्यक्ति के परिवार, समाज, इत्यादि क्षेत्रों में कुसमायोजित व्यवहार को दूर कर व्यक्ति को समायोजन में सहायता करता है। स्वस्थ व्यक्तित्व स्वस्थ समायोजन का प्रतीक है। समायोजन सहज हो तथा आडम्बर विहीन हो यही निर्देशन का मूल मंत्र है। स्व को पहचान कर स्वज्ञान द्वारा अपनी आकांक्षा अपेक्षा को लगाम देना और विकास की धारा में अपने आपको लीन करना ही स्वस्थ समायोजन है।

(vi) संवेगात्मक विकास Emotional Development

संवेगात्मक विकास जीवन का आवश्यक पहलू है। संवेगात्मक सन्तुलन के द्वारा ही व्यक्ति अपने वातावरण के साथ ही अनेक रूप से समायोजित कर निरंतर प्रगति कर सकता है। संवेगात्मक विकास माता-पिता के व्यवहार, परिवार के सदस्यों के आपसी व्यवहार से प्रभावित होता है। अपनी भावनाओं को समझना, उन पर नियंत्रण करना एवं उन्हें समाज में मान्य तरीकों द्वारा प्रदर्शित करना संवेगात्मक सन्तुलन के लिए आवश्यक है अतः संवेगात्मक विकास हेतु भी निर्देशन आवश्यक है।

2. सामाजिक दृष्टि से निर्देशन की आवश्यकता Need of Guidance form social point of view

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह जिस समाज में जन्म लेता है उसी समाज में उसे समायोजन करना पड़ता है। तभी वह सामाजिक रूप से स्वीकार्य होता है। आज के परिवर्तनशील युग में मनुष्य की बहुत सी सामाजिक आवश्यकताएँ हैं अतः उसे उचित दिशा प्रदान करने के लिए निर्देशन को देने की आवश्यकता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखा तो कई ऐसे सामाजिक पक्ष हैं जिनमें उसे निर्देशन देने की आवश्यकता है जिनमें से कुछ पक्षों की चर्चा यहाँ की जा रही है।

(i) यांत्रिक सभ्यता के विकास के कारण. Due To the Machinery civilization.

आज का समय यांत्रिक-सभ्यता का समय है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मशीनों एवं यं[त्रों] का प्रयोग दिन व दिन बढ़ता ही जा रहा है। इसका कारण औद्योगिकीकरण है। औद्योगिकीकरण के कारण मनुष्य के पास समय की अधिकता भी हो गई इस यांत्रिक युग में मनुष्य को अपने समायोजन तथा समय के उपयोग के बारे में निर्देशन की आवश्यकता रहती है। कारखानों में नई-2 विकसित तथा तकनीकों को समझने के लिए भी निर्देशन चाहिए।

Scanned with CamScanner